भजन

तर्ज : एक तेरा साथ है हमको दो जहाँ से प्यारा है

श्री जी मेहरबान का जयघोष करते जाना है,चरणों में सर झुकाना है
साहेब के दरबार में सारी दुनियां को आना है, ये ही कायम ठिकाना है

1. आयेगें धनी, कहे आगम की वाणी, करी वेदों पुकार
सब अगम निगम गाये, जग में ही भरमाये, ना कोई पावन हार
कुलजम वाणी से धाम, निजधाम पहचाना है चरणों में.

2. नूर तारतम से, आये धनी सबको, धाम दरशाने को
खेल में उतरी, अपनी अंगनाओं को, साथ ले जाने को
तारतम का भेद पाकर, आतम को जगाना है, चरणों में.....

3. हो गई जाहेर, ब्रह्म की वो ब्रह्मलीला हुआ सबको दीदार
बरस रही प्यारे, महबूब की मेहर, चलो अब पार के पार
श्रीजी पंजे वाले, साहेब को दिल में बसाना है, चरणों में .....

4. छत्ता ने जाना, और पूरा पहचाना, ये ही मेरे प्रीतम है
सेवा सब करली, अपने धनीजी की, किया सब अरपन है
छत्रसाल महाराज का, जयकार करते है, गुणगान करते जाना है
श्री जी मेहरबान का जयघोष.....